नवरत्न गोष्ठीक ६म पुष्प

समाधान

लेखक —

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

सम्पादक, निर्माण (साप्ताहिक)

निर्माण प्रकाशन

लहेरियासराय

मूल्य ।=)

कहबाक अछि जे..........

जन साधारणक जीवन केँ स्पर्श करैत ओकरा अन्तःकरण मे अपन स्थान सुगमता सँ बना लेबाक शक्ति जतेक दृश्य काव्य मे होइत छैक ततेक आन मे नहि। नाटको मे मैथिली साहित्य लोकभाषा साहित्य मे सब सँ अगुऐल रहल अछि, उमापति उपाध्यायक 'पारिजात हरण' सब सँ प्राचीन नाटक मानल जाइछ, वर्त्तमान युग मे चलचित्रक कारणे प्रत्येक भाषा मे नाटकक रचना थोड़ होमै लागल, जेहो किछु भै रहल अछि से पढ़बाक बुद्धिएँ, मंच करबाक बुद्धिये बड़ थोड़। जहिना उपन्यास सँ अधिक लोकप्रियता लघु-कथा प्राप्त कैलक तहिना नाटको मे एकांकी अथवा प्रहसन। वर्त्तमान कालीन मैथिली साहित्यक धुरन्धर विद्वान लोकनि एहि दिश प्रवृत्त भेलाह। व्यंग्य सम्राट प्रो० श्री हरिमोहन झा, प्रो० श्री तन्त्रनाथ झाजी पं० श्री कांचीनाथ झा 'किरण' एहि क्षेत्र मे नीक काज कैलन्हि अछि।

प्रायः हमरो बहुत पहिने सँ अनेक नाटक देखबाक, पढ़बाक ओ मंच करबाक अवसर प्राप्त भेल अछि एहि मे रुचि रहलाक कारणेँ। समय-समय पर हिन्दीओ नाटक संग मैथिलीक प्रहसन जनता मे बड़ लोक प्रियता प्राप्त कैलक आ हमरा सँ कतेक अवसर पर बहुतो मैथिली प्रेमी लोकनि प्रहसन लिखि देबाक आग्रह करैत रहलाह। एही सब अवसर पर लिखित प्रहसन मे सँ तीनि गोट, जे सामाजिक समस्याक समाधान दिश संकेत करैत अछि एहि मे संगृहीत अछि। एहि सभक मंच कतेको ठाम भै चुकल अछि जाहि मे विहारक मुख्य मंत्री लोकनि उपस्थित रहलाह अछि। आशा अछि जे नाटक प्रेमी लोकनिक हेतु ई मनोरंजक एवं अशिक्षित जन समुदायक हेतु शिक्षा प्रद सिद्ध हैत। किमधिकं विज्ञेषु।

जानकी नवमी

संबत् २०११

—लेखक

निर्माण कार्यालय
बंगाली टोला
लहेरियासराय

पहिल खेप—१०००
१९५५

मुद्रक –
श्री जयाशंकर सिंह

निरक्षरता निवारक पाठशाला

प्रथम दृश्य

[स्थान—सोनेझाक दलान, गोनड़ि ओछौल, कतवहि मे कुट्टी काटक हाँसू राखल, एकटा छुतहड़ ओंघड़ैल, एकटा चरपाइ पर सोने झा बैसल, माँझिल बेटा एमहर सँ आबि ओमहर जाय लगैत छथिन्ह—]

सोने झा—हौ पाँचो ! सबटा कड़्ची बथाने पर पड़ल छह, महींस काछड़ि कटैत कटैत सब गोंत-गोबर केँ घोरि कै अमौट बना देलकह आ' तोँ टलवाहि केने फिरैत छह ?

(पंचमनि मुँह दूसि कै पड़ा जाइत अछि)

सोने झा—हौ बूड़ि ! कयौ नहिं काज औतह, धन्न ई बुढ़िआ महींस जे चुरकी पर तेल, एमहर अबैत' छह की आउ ?

(पंचमनि मुँह फुलौने अबैत अछि)

पंचमनि—हमरा भाइ कहलन्हि अछि पंच सब केँ बजा लाबै ।

सोने झा—बड़ पंचक नाँति बनलाह अछि, जेहने ओ बूड़ि, कने गान्ही टोपी माथ पर लेलन्हि की नबाब भै गेलाह जतेक नाढ़र से गामक पंच, अपन काज करह गऽ की हम एही हाँसू सँ कुट्टी-कुट्टी कै देब।

[सोने झा ओकरा पर हुड़कैत छथिन्ह, ताबत् गान्धी टोपी पहिरने चतुर्भुजक प्रवेश—]

चतुर्भुज—एँ हौ पंचमनि ! तों गेलाह नहिं ?

(पंचमनि इसारा सँ बूढ़ाक दिस देखबैत छैन्हि)

चतुर्भुज—सब नाश कैलह।

सोने झा—ई: बूड़ि नाढ़र नहि तँ, अपने लोकक पाछाँ-पाछाँ ढहनैल फिरैत छथि, आ' ई जँ घरक काज करैत अछि तँ नाश कैलकन्हि ?

चतुर्भुज—काका ! अहाँ बुझैत छिऐक किछुने आ' सब बात मे दखल देबै लगैत छिऐक।

सोने झा—हँऽ हौ, जैँ हम नहि किछु बुझैत छिऐक तैँने तोरा सन वंश कुड़हरि, खाली बेंट लागब बाँकी छह. से लगा देल जाइ तँ अङरेजिआ कोदारि भै जैबह। हौ ! पंचक पाछू-पाछू घुमने कोन नेढ़ा भेटतह ?

चतुर्भुज—[कनेक जोर सँ-] हमरा कोन काज अछि पंचक ?

सोने झा—तँ किऐक कहैत छहक बजा' लाबै ?

चतुर्भुज—भरि गामक लोक मूर्ख मूर्ख अछि तैँ.........

सोने झा—तैं तोरा की ?

चतुर्भुज—हमरा की ? हमरा यैह जे स्वतन्त्र देशक युवक छी ई सब देखि कै लाज होइत अछि।

सोने झा—आ' अपने धाकड़ सन भै गेलाह, तैओ घर-दुआर नाश होइत छह तकर लाज नहि ?

चतुर्भुज—से हमरे द्वारे नाश होइत अछि ? ताहि लै हम की करब ?

सोने झा—तों की करबह, खाली भरि गामक पाछू नुड़िऐल फिरह, अपने लीखि-पढ़ि कै कटहर मे नेढ़ा लगबैत छह, आब चललाह अछि भरि गाम कें पढ़ाबै।

चतुर्भुज—अहाँ सँ के लागौ "कनही गाइ केर भिन्ने बथान"।

सोने झा—(चतुर्भुज कें हुरपेटैत)—ऍं रौ ! तोरा लेखें हम कनही गाय, पड़ाह एहि ठाम सँ की हम······

चतुर्भुज—अहाँक मारने हमर इज्जति कहाँ चल जैत, बाप तँ बेटा कें मारते छैक, डँटिते छैक, मुदा दुलारो तँ वैह करैत छैक।

सोने झा—तोरे सन चुल्हिचन के दुलार करतैक।

चतुर्भुज—हौ पंचमनि ! तोँ झट दै जाह, कहिहौन्हि जे स्कूल पर अबैत जैताह शीघ्रे ने तँ साँझ पड़ि जैतन्हि।

सोने झा—अपना जतै जैबाक होअऽ से जाह, ओ नहि जैतह।

पंचमनि—ईः हम जैब ने तँ की ?

सोने झा—जाह तँ हम देखैत छिअहु।

[पंचमनि जाय लगैत अछि, सोने झा मारै दौड़ैत छथिन्ह चतुर्भुज पकड़ैत छथिन्ह, पंचमनि पड़ाइत अछि, सोने झा सब कड़ची पात कें उठा कै छीटै लगैत छथि, परदा खसैत अछि।]

दोसर दृश्य

[स्थान—गामक स्कूल तीन व्यक्ति बैसल छथि, —चतुर्भुजक प्रवेश।]

चतुर्भुज—आरो गोटे कतै जाइत गेलाह ?

एक पंच--सब अपना अपना काजक लेल चारू भाग छिड़िऐल छथि।

दोसर— कोन काज अछि सभक ?

तेसर— औ चतुर्भुज बाबू ! परमिन्ट-तरमिन्टक काज मे जतेक कम लोक रहत ततेक नीक, अपने सब मिलि कै सब काज कैं लेब सैह ठीक। जखन पंच भेलहुँ आ' अपनो लोकवेद नीक जकाँ खुसफैल सं नहि रहल, दू पाइ बाइली प्राप्ति नहि, तखन तँ भाँड़ो छुइल आ' पेटो नहि भरल, की औ नेना बाबू ?

नेना बाबू—अवस्से की।

दोसर पंच--हमर तँ विचार होइत अछि जे चतुर्भुज बाबू पर भरि गामक लोक कें विश्वास छैक, हिनका पढ़ि गेला सँ सब काज सोझरैले अछि।

चतुर्भुज—औ नेना बाबू! एहि बुद्धिञे गामक उन्नति हैब कठिन अछि। हमरा लोकनिक उपर बड़ भारी भार अछि, महात्मा गान्धी बड़ सूक्ष्म दृष्टिञे हमरा लोकनिक जीवनक अध्ययन कैने छलाह, ओ बुझैत छलथिन्ह जे बड़े-बड़े नगरक अभ्युत्थान सँ भारतवर्षक जन-साधारणक जीवन उन्नत हैब असम्भव, एहि ठामक संस्कृति हमरा गामक कणकण मे मिलल अछि, तैँ हुनकर ध्यान भारतवर्षक गाम पर गेलन्हि। हमरा लोकनिक आँखिक सोझाँ जतेक स्थावर जंगम पदार्थ अछि, सब हमरे अहाँक सुख सुविधा एवं आत्म विकासक साधन थिक, अतएव ई सिद्ध अछि जे एहि निखिल भूमण्डलक सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्ये अर्थात् हमहीं अहाँ थिकहुँ, समस्त सृष्टि पर एक मात्र मनुष्यक अधिकार छैक आ' 'से मनुष्य अपना अधिकार सँ वञ्चित अछि' ई कथा महात्माजीक आँखि मे बड़ खटकलन्हि, ओ एही हेतुएँ सब सँ पहिने ग्रामोद्योग पर जोर देलथिन्ह जकर प्रतीक थिक चर्खा।

नेना बाबू—अवस्से की।

तेसर— चर्खा सँ कोन उन्नति भेल?

चतुर्भुज—चर्खा हमरा स्वावलम्बिता सिखबैत अछि, भोजनक

चिन्ता हम अहाँ सब दिन करैत छी, मुदा वस्त्रक नहि।

नेना बाबू--अवस्से की।

चतुर्भुज--अन्न, वस्त्र दूनू अत्यन्त आवश्यक वस्तु थीक, प्रत्युत् अन्नक अभाव मे दू चारि दिन प्राण धारण कै सकैत छी, मुदा वस्त्रक अभाव मे एकोक्षण बितैब परम संकट, की तकर चिन्ता हम अहाँ करैत छी?

दोसर पंच--नहि।

चतुर्भुज-हमरा अहाँ कें स्वतन्त्र शब्दक अर्थ नहि लगैत अछि।

नेना बाबू--अवस्से की।

चतुर्भुज--यदि हमरे अहाँक विचार पतित हो तँ स्वतन्त्रता के लेत? तेहना स्थिति मे सरकार जँ कोनो सुविधाक प्रबन्ध करत तँ हमरे अहाँक हाथेँ! आ' हम अहाँ अपन स्वार्थ साधन मे लागि जाइ तँ ई दोष सरकारक अथवा हमरा अहाँक?

तेसर पंच--हँऽ मुदा......

चतुर्भुज--मुदा तुदा किछु नहि, बिनु हमरा सभक विचारेँ समाजक कोन गति?

नेना बाबू अवस्से की।

दोसर पंच--ई बात खब बुझैक तखन कि ने?

तेसर-- खाली हमरे अहाँक बुझने तँ हेतैक नहि, तखन

बुढ़िपनी करी जे अपनो दुःख काटी, आ' कि नहि औ !

नेना बाबू—अवस्से की ।

चतुर्भुज--सब कोना बुझतैक ?

दोसर पंच-सैह कहू !

तेसर— हमरा अहाँक साध्य थिक जे सौंसे संसारक लोक कें बुझौने फिरबैक, कहू औ !

नेना बाबू—अवस्से की ।

चतुर्भुज-- साध्य किऐक ने थिक । एकर कारण छैक अशिक्षा, जतेक शिक्षित लोक रहत ततेक एकर महत्व बुझतैक से जँ अधिक कें शिक्षित बना' देल जाय तँ सब अपन अपन उत्तरदायित्व बुझै' लगतैक ।

नेना बाबू—अवस्से की ।

चतुर्भुज—तैं हमर विचार जे एकगोट निरक्षरता निवारक पाठशाला फोली ।

दोसर पंच-आ कोना हेतैक ?

चतुर्भुज--जतेक लिखल पढ़ल लोक छी से यदि प्रतिज्ञा करी आ' कम सँ कम दस व्यक्ति कें शिक्षित बनाबी एक सँ दस, दस सँ सै, सै सँ हजार तुरत भै जैत । तैं हेतु साँझ खन जे समय घूड़लग बितैत अछि से एही काज मे लगाबी तँ कोन क्षति ?

सब गोटे—कोनो क्षति नहि ।

(ईकहि सब उठि जाइत छथि पट परिवर्त्तित होइत अछि)

दृश्य तेसर

[स्थान—नेना बाबूक दलान, घूड़ पजारल अछि चारि पाँच व्यक्ति बैसल अछि खोरना सँ घूड़ केँ खोरैत--]

गूजन—नेवालाल ! ई: आगि जे अछि अल्हुआ पकैबाक जोग ।

सन्तलाल—तऽ बड़ विलच्छन आगि अछि ।

नेवालाल—बूझल नहि छह—

बड़का घूड़क ओ भुम्हुर आगि

घोंसिआय दैत छल हृदय दागि,

गूजन—आगि मे पकौल आलूक साना महाग सोन्हगर होइत छैक ।

सन्तलाल—जँ कनेक सुच्चा कड़ू तेल रहैक ।

नेवालाल—आ' सेहो अँचारक ।

गूजन—आब सैह भेटब दुर्लभ ।

सन्तलाल—तऽ आइ छोटकनि काकाक आङनक भोज मे बडी जे चिटचिटाईनि लगैत छल ।

नेवालाल—ताहि मे किछु सोनक दोष आ' किछु सोनारक ।

गूजन—से बात धरि ठीके, परसरमा बाली केँ बड़ी रान्हहु नहि अबैत छैन्हि ।

सन्तलाल—आ' ताहि पर सँ टिपौरी की ।

गूजन—अदौड़ी भाँट। सेहो भौंसाइनि।

सन्तलाल—आ' तिलक अँचार जेना बिलाड़िक ····।

नेवालाल—दुर छी अंचारो केँ दूरि कैल।

सन्तलाल—हौ! तिल जे छैन्हि भैअन काकाक धूर पर।

गूजन—आ' घास ?

नेवालाल—ओहेन चण्ठ क्यौ गाममे अछि ?

(चतुर्भुज प्रवेश करैत)

चतुर्भुज-अहाँ लोकनि की करैत छी ?

सन्तलाल—पहाड़ ढाहैत छी।

गूजन-रेलवी पर रोड़ा खसतैक।

नेवालाल-कोन रेलवी पर ?

सन्तलाल-यैह चतुर्भुज बाबू अपना गामे दऽने रेल सञौथिन्ह।

(चतुर्भुज कनेक क्रुद्ध होइत छथि किन्तु हँसमुख मुद्रा बनबैत—)

चतुर्भुज—अहाँ लोकनि चाही तँ हवाइ जहाज पर्यन्त आबि सकैछ।

सन्तलाल-ओ उतरत कतै ?

गूजन- सौंसे बाध केँ परती बनबा देथिन्ह।

चतुर्भुज-हटाउ एहि गप्प केँ. हम जे कहब से करब ?

नेवालाल-भला कहू।

सन्तलाल-अपना गामक महात्मा गान्धी यैह छथिन्ह की।

गूजन— दुर बूड़ि ताहू सँ बेसी, ई तँ जमाहिरे लाल·······।

(सब ठहाका मारि हँसैत अछि, नेना बाबूक प्रवेश)

नेनाबाबू–चलैत चलह उपर, जे जे पढ़बैत छथुन्ह से से पढ़ह।

(सब दलान पर जाइत अछि)

चतुर्भुज–पढ़ैत जाउ !

सन्तलाल–अहाँ पढ़ाउ ने।

गूजन— आब एहि बुढ़ारी बैस मे हिं हिं हिं हिं।

नेबालाल–ऊपारक लिखलाहा।

चतुर्भुज–(पाटी पर किछु लिखि कै) तरटेका कऽ।

सन्तलाल–तट्टेका कऽ।

गूजन— आ' दुर बूड़ि तऽर टेका कऽ।

नेबालाल–नहि भेलह, कैलह तँ जन्मभरि महिंसवारि तखन हेतह कोना, कहक तऽर टेऽकाऽ कऽ।

(सब ठहाका मारैत अछि, सोने झाक प्रवेश)

सोने झा—ऐँ हौ चतुर ! एही सँ जीवन चलतह ?

सन्तलाल–सोने काका ! अहूँ थोड़े पढ़ि लिअऽ।

गूजन— अहींक बेटा मास्टर तखन अहाँ कें कोन कम्मी ?

नेबालाल–जकरे माय मरैक तकरे पात भात नहि ?

सन्तलाल–अहाँ कें गुरूक सप्पत थिक।

चतुर्भुज–बेजाइए कोन ?

सोने झा–हँ हौ चतुर ! छौंड़ी सिखाबै बुढ़ दादी कें ?

नेनाबाबू–सोने काका ! क्षति कोन ? आउ थोड़ेक पढ़ा' दैत छी।

सोने झा –हे लैह (कहि बैसि जाइत छथि) हौ आजुक छौंड़ा केँ सलाइ तँ नहि ने कीनै पड़तैक।

नेनाबाबू—से किऐक सोने काका ?

सोने झा—आब सब अपने आगि मुतैत अछि तखन……।

(सब ठहाका दैत अछि)

नेनाबाबू–सोने काका लिअऽ भट्ठा।

(सोने झा भट्ठा धरैत छथि)

नेनाबाबू—पढू ! क' ख' ग' घ' ङ'।

सोने झा—कखगघ उवाँ।

नेनाबाबू—उवाँ नहिं ङ'

सोने झा—न

नेनाबाबू–न' नहिं, ङ।

सोने झा–गं,।

नेनाबाबू–गं नहिं, नाक लऽ कऽ कहिऔ।

सोने झा—नाक लऽ क„ ?

नेनाबाबू–हँऽ, क' ख' ग' घ' नाक लऽ कऽ ङ'।

सोने झाक—क खऽ ग घ, नाक लऽ कऽ खुँ:

(सब ठहाका मारैत अछि)

सोने झा-(सब केँ डंटैत) बुड़ि सटही सब नहितऽ, ठि ठि ठि ठि ? कालिह जँ सब नहिं सुना दी तँ सोने नाँव नहि।

सन्तलाल—कालिह की ? आइ सुनाबी तँ बूझी मर्द।

(सोने झा पहाड़ा पोथी पर थोड़ेक काल आङुर फेरि कै एक स्वरें क' सँच, पर्यन्त पढ़ि जाइत छथि)

सब— वाह रे सोने काका…… ..

सोने झा—कनेक आरो थम्हह, (थोड़ेक काल ठोर पट पटबैत छथि पुनः कठिवर काने कऽ कांचून काऽ सँ लै दू बन्ना दू पासी कः धरि, स्वर मे पढ़ि जाइत छथि ।)

सब — वाह रे सोने काका वाह, वाह ।

सोने झा--हौ मनुक्ख जे चाहै से कै सकैत अछि। आब एकबार नहिं पढ़ी तँ मोंछ ने राखी……।

(सब हँसैत अछि, परदा खसैत अछि)



आधुनिक पाठ्य-प्रणाली

प्रहसन

[पाकल केश, ठेहुँन धरि धोती, देहमे गोल गला गंजी, कान्ह पर अंगपोछा, उद्ध्र्व पुण्डक उपर अर्ध चन्द्र सन चानन, भयंकर त्रिपुण्ड, सिन्नुरक ठोप, गराँ मे डबलका दानावला रुद्राक्षक माला पहिरने बुधनक प्रवेश]

बुद्धन—एकटा बड़ पुरान कहबी छैक जे पेट काटि कै पोसल पूत, सैह पूत कहै फलामा भूत, तकरे परि अछि अपना देश मे। बेचारे गान्धीबाबा कोन-कोन दुख कटलनि एहि सोराजक हेतु से वैह जनैत छलाह तखनतँ भेल सोराज आ' ताहि सोराजक ताल देखि तँ किछु फुरिते नहि अछि, एहुना होइत छैक ?

[बचकानी—छोट खुटक लोक, गाल पर पैघ 'अइला', फ्रेंच 'कट' मोंछ, हाफ सर्ट पहिरने, श्रीखण्डक भाड़ चानन एक धारी आ' सोकी कोर सँ सिनुरक बिन्दी।]

बचकानी—प्रवेश कै बुद्धन काका कोन ताल देखि कै किछु नहि फुरैत अछि ?

बुद्धन हौ बचकानी ! तोरा सभ तँ नेना छह। औ सभ दुनिआ नहि देखलहक तखन की बुझबहक ?

बचकानी— बुझौने ने बुझबैक। बुझिने तँ क्यौ जन्म नहि लेलक अछि ?

बुद्धन—हौ ! भैया कका कहथिन्ह जे पहिलुका लोक सब पढ़बाक लेल जाय काशी, जखन सौंसे शास्त्र पढ़ल भै जाइक तँ आबै देश आ' महाराज साहेबक ओहि ठाँ होइक परीक्षा धोती मे —

बचकानी—धोती मे कोना परीक्षा होइक ? हा हा हा हा…!

बुद्धन—बस, दाँत छह संग मे निपोड़ि देलह। मुँह छह अपन की हँसि उठलाह, तोरो बुड़ित्व जिनगी भरि छुटतह नहि ? बचकानी—उँ हूँ……धोती मे कोना परीक्षा होइक ?

बुद्धन—लोक महाराजक ओहि ठाँ परीक्षा देल करै आ' पास करै तँ सार्टीपिटी मे महाराज अपने हाथेँ धोती देथिन्ह।

बचकानी—आ' जँ फस्ट करै तखन ?

बुद्धन—फस्ट करै तँ दोशाला ! मुदा जखन तीर्थ, आचार्य, इन्टरेंस ई सब परीक्षा चललैक तँ लोक साले-साले परीक्षा देल करै, पास करै की फेल करै।

बचकानी—एखनो तँ से होइते छैक।

बुद्धन—हौ नहि बूझल छह। आब तँ परीक्षा भै गेल सत्यनारायणक पूजा—सँकरातिये-सँक्रातिये।

बचकानी--हँ औ काका ! से कोनो बेजाय नहि कहलहुँ, ई बात तँ हमरा मने ने छल सत्यनारायणक पूजा मे तँ अपवादो छैक जे 'अभावे शालि चूर्णं वा' मुदा एहि मे ताहि सब सँ काज चलै बला नहि, एहिठाम तँ एकदम बस 'रम्भा फलम् घृतं चीरम्' आ' से जँ नहि भेल तँ......

बुद्धन—तखन मास्टर लोकनि धिया-पूता केँ 'गोधूमस्य च चूर्णकम्' बना देथि ।

बचकानी—बाप रे ! से धरि सत्ते, छोट-छोट नेना सब हक्कर-पेलैत चढ़ले भानस मे सँ काँचे कोचिल खा कै तीन-तीन कोस दौड़ल जाइत अछि आ' सुनैत छिऐक जे स्कूल पर एकरा सब सँ टकुरी-चर्खा कटबबैत जाइत छैक ।

बुद्धन--सैह बूझह, ई लूरि बेटी ने सीखै जे जनउ काटत आ' बेटा केँ को सासुर बसबाक छैक ?

बचकानी--औ बुद्धन कका ! कोदारि-खुरपी सेहो चलबबैत छैक ।

बुद्धन—ई सोन सन सन नेना सब सँ कोदारि चलबौल जाइक ? ई उचित थिकैक ?

बचकानी-आ' ताहू पर सँ एक जपाल आर.....

बुद्धन—हँ हौ, गोड़ दशेक मोटकी कोपी लदने जाइत अछि आ' लदने अबैत अछि, एना तँ नेना सभक करेजे ने टूटि जाइक ?

बचकानी--जेना सभक करेज तँ आगाँ पाछाँ टुटतैक जे अपन करेज तँ कागत आ' पोथी कीनैत-कीनैत एखने टूटि रहल अछि ।

बुद्धन—हौ जी बचकानी, तोँ तँ जनिते छह जे हम जीहक पातर लोक छी, कनेक चटनी भेल ताकै, भूर कै तरल कनेक मेरचाइ हो ....?

बचकानी—हँ से तँ ठीके। दूध, दही, घीक सङे ने अन्न ससरैत छैक आ' से तँ भै गेल सपना, तखन जँ चहटगर वस्तु नहि होइक तँ लोक केँ कोना ससरतैक...

बुद्धन--मुदा खुट्टा पर दू टा बड़द अछि, ओकरा पन्हैबाक तँ कोनो टा आशा नहि। आ' ई छौड़ा -सब, सब दिन चढ़ले भानस मे सँ खा कै स्कूल जाइत अछि। भानस कैनिहारिक मोन नङो-चङो भै गेने कथी लै कहिओ रुचिगर अन्न सोझाँ मे आबि सकत।

बचकानी--बुद्धन कका ! अहाँक गप्प तँ बूझि पड़ैत अछि जेना हमरे पेट सँ बहराइत हो, यैह ताल अछि हमरो आङनक। जँ ईहो सार्थक होइत तँ एकटा बात छल, सेहो तँ देखैत छी जे स्कूलो मे पढ़ौनाइ सँ बेसी कोर्दारवाहिए होइत छैक। हमरा छोटकनिक हाथ मे ठेला भै गेलैक अछि।

बुद्धन--मन निचैन छह ?

बचकानी—निचैन तँ जा धरि जीबैत रहब ता धरि नहिञे हैब तखन जखने बूझी तखने निचैन ?

बुद्धन—हौ, मन मे एकटा मनसूबा बन्हने रही, मुदा आब की कहिअह—'मनक मनोरथ मनहि बैतित भेल, आन करैत भेल आन हो रामा' !

बचकानी—आ' हमर मनोरथ तँ बौग करबाक योग खेसाड़ी जकाँ फूलि कै मने मे अँकुरा गेल अछि ।

बुद्धन—हौ ! सोचैत छलहुँ जे नूनू केँ ओकालति पढ़ैब, सोनू के कलस्टरी आ,' सचनू केँ पण्डिताइ आ' मङनू केँ डाकदरी ।

बचकानी—हँऽ औ' बुद्धन कका ! अहाँ केँ तँ भगवान् चारिटा बेटा देने छथि; बोनिञो करत तँ चारि चौका सोड़ह सेर, मुदा हमरा तँ एखन एके टा पेंपी अछि आ' हमहुँ मन-सूबा बन्हैत रही जे एकरा लिखैब, पढ़ैब बुढ़ारी मे ई कमा कै टाल लगा देत, बथान पर महींस राखब आ' छाल्ही संग फुलकी केँ पनपिआइ मे दुख देल करबैक आ' घिउ मे तरल तिलकोड़ केँ ओरिया कै दाँत तर देबैक जे कुड़कुड़ा कै भरकुस्सा भै जैत ।

बुद्धन—हौ बचकानी । कहैत छलहुँ जे ई छौंड़ा सब कमा कै अमार लगा देत ।

बचकानी—से तँ सत्ते डाकदर जँ होइत तँ एक रत्ती नाड़ी छुबितनि की धरा लितन्हि सोड़ह रुपैआ। एँह...

बुद्धन—कही जे तखन ई लङ्टवा सब, जे एखन कनडेरिये तकैत अछि, सेहो कहत—परनाम बुद्धन बाबू।

बचकानी—काका! बिनु धारने परोपट्टाक लोक बहिया बनल रहैत, मुदा हाय रे कर्म! कहबी छैक जे 'बहिरा नाचै अपने तालेँ' तकर परि छैक आइ-कालिह!

बुद्धन—तऽ, ककरा की बितैत छैक से पुछारि के करैत अछि, खाली भोट लेबाक दिन मे सात बेर कै पुछारी।

(नूनू प्रवेश कै)

----बाबू हम स्कूल नहि जैब।

बुद्धन—से किऐक ?

बचकानी—कुकुरमाछी कटैत हेतैन्हि।

नूनू—हमरा पथिआ-खुरपी कहाँ कीनि देलहुँ ?

बुद्धन—तोरा घास छिलबाक छह ?

नूनू--नहि, कस्तर मस्टर उठैब आ' खेत मे रामझिमनी रोपब।

बुद्धन--कस्तर मस्टर उठैबह ?

नूनू—हँ, समाज-सेवाक घंटी मे।

बुद्धन—घंटी मे आ' घंटा मे, समाज-सेवा करै चलल छथि? माय-बाप के बङोर लगा कै उपस्थिते ने करैत छथि आ' समाज-सेवा करै चलल छथि? अभागल नहि तन। रामझिमनी कतै रोपबह ?

बचकानी—बड़का डोड़ा मे एहि बेर रामझिमनिञे, किने हौ नूनू।

नूनू—उँ हूँ·····स्कूलक खेत मे।

बुद्धन—वृड़ि कहाँ केर, हमर खेत बटाइ जोतै आन आ' ई स्कूल पर खेत बटाइ करैत छथि ?

नूनू—बटाइ करैत छी की मास्टर साहेब कहैत छथिन्ह ?

(सोनू प्रवेश कै)

सोनू—बाबू ! हमरा चरखा कहाँ भेल ?

बुद्धन—हौ तोँ मसोम्मातक बेटा थिकाह जे चर्खा लेबह। ओ तँ गान्धी बाबा एकटा रास्ता देखा गेलथिन्ह जे राँड़, मसोम्मात अपन गुजर करत, जकर जीवन पहाड़ छैक, आ' तोरा कथीक चिन्ता छह ? कोन वस्तुक कम्मी छह ?

सोनू—मास्टर साहेब सब कहैत छथिन्ह······

बुद्धन–साफ-साफ कहुन्ह जे हम मसोम्मातक बेटा नहि छी, अहाँ केँ जनउक खगता हो तँ से कहू, हम गाम पर सँ नेने ऐब।

(सचनू प्रवेश कै)

बाबू—हमरा कोदारि कहाँ भेल, हम खेतीक घंटी मे कोना काज करब ?

बुद्धन—रे राक्षस सब ! तोरा सब केँ सनक सवार भेल

छौक ? अभागल सब ! पोथी लेताह, पतड़ा लेताह, कागत-पिलसिम लेताह से नहिञे, तँ पथिआ, खुरपी कोदारि, चर्खा । विधाता जे कपार मे भोथहा कलम सँ घसि देलथिन्ह तकर कोन उपाय ? आब नाकदम ठेकि गेल ।

बचकानी—औ बुद्धन कका ! अहाँ नेना सब पर बेकारे ने तमसाइत छिऐक, ई की अपना मने कहैत अछि ?

बुद्धन—मास्टरे सब केँ ई कोन सनक सबार भेल छैक, नहि पढ़ैबाक छैक तँ छोड़ि दौक । मास्टरक कोनो कम्मी छैक ? लिखले-पढ़ल लोक तँ आइ कालिह सस्त अछि, एक बजाबै चौदह आबै ।

बचकानी-औ ! मास्टर सब केँ तँ अपने नाकदम ठेकल छैक, की करत बेचारा सब, एहन रङताल तँ देखने ने छलिऐक, एना कतहु पढ़ाइ होइक ?

बुद्धन---हमरा तँ आब किछु फुरिते ने अछि । हमरा धिआ पुता केँ पढ़ैबाक अछि की गृहस्थी सिखैबाक अछि ?

बचकानी—आब तँ ने पढ़त ने गृहस्थ हैत, पाँच वर्षक बाद अगबे बनहुल्लुक गाम मे पसरि जैत, ने वानर ने मनुक्ख !

(नेनमणि प्रवेश कै ।)

नेनमणि—बुद्धन भाइ ! मोन बड़ लोहछल देखैत छी की कोनो नव बात भेलैक अछि ?

बुद्धन--हौ नेनमणि ! तों बड़ बेरि पर ऐलाह। तों तँ संसार भरिक हाल चाल पढ़ैत छह; जनैत छहक। ई बात कहह जे गान्धी बाबा जे सोराज लेलनि से एही लेल जे बाप चाहै बेटा कें पढ़ाबी आ' मास्टर सब ओकरा सँ घास छिलबथिन्ह ?

नेनमणि—के कहलक अछि ई सब बात ? सुनू आब की पुरनका जमाना छैक जे लोक एके शास्त्र कें घसैत रहत ? आब तँ देश स्वतंत्र भै गेलैक, आब जे पढ़ैत अछि से ज्ञानक लेल... ..

बुद्धन—हौ जी ! हमरा होइत छल जे तों मनुक्ख भेलह, बात बुझैत हेबहक, एकबार-तेकबार पढ़ैत छह तँ बुद्धि नीक भेल हेतह मुदा तों तँ बाबू सिलौटो कें जितने छह।

नेनमणि—बुद्धन भाइ ! जा' धरि अङरेजक राज छलैक तावत जे लोक पढ़ैत छल से खाली नौकरी करबाक लेल आ' सरकार जे पढ़बैक सेहो ताहीं लेल मुदा.....

बुद्धन---आब लोक पढ़ैत अछि ढहनैबाक लेल, लिखलक-पढ़लक ढहनैल फिरल आ' अन्त मे......

नेनमणि—नहि, आब लोक पढ़ैत अछि ई ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु जे साफ-सुथरा रहने लोक कें की लाभ छैक।

बुद्धन--आ' सातबेरि कै केश फेरने की लाभ......

नेनमणि--अहाँ के एखन क्रोध भेल अछि तें एहि रहस्य

दिश ध्यान नहि जाइछ। मुदा सुनू तँ, जतेक लोक पढ़ैत अछि से सब नोकरिए करै तँ एतेक नोकर राखत के ?

बुद्धन—से तँ बूझल, मुदा तैओ तँ सब वर्ण पढ़नाइए सुरुह कैलक अछि।

बचकानी—अपन-अपन जे व्यवसाय छैक, से करैत तँ आब लोक केँ लाज बुझना जाइत छैक।

नेनमणि—तकर कारण ई छैक जे हमरा लोकनि बहुत दिन स परतंत्र छलहुँ ते पढ़बाक की अर्थ होइत छैक से बुझिते ने छलिऐक।

बचकानी—लिखलक-पढ़लक नोकरी तकलक, सैह होइत छल।

नेनमणि—हँऽ, मुदा नोकरी सँ तँ कमा कै आनत टाका आ' टाका चूरि कै क्यौ खैत नहि, खैत तँ अन्ने।

बुद्धन—हँऽ, से तँ ठीके मुदा अन्नक हेतु धरती कोड़ै पड़ैत छैक।

नेनमणि—तँ ने धिया पुता केँ कोदारि-खुरपी कहैत छैक चलबै।

बुद्धन—ई गामे पर किऐक ने करत जे स्कूल मे जा कै करत।

नेनमणि—असल मे मनुष्य केँ कोना बजबाक चाही, कोना ठाढ़ हैबाक चाही, कोना बैसबाक चाही, ककरा सङे कोना व्यवहार करबाक चाही, अपने साफ-सुथरा रहने कोन लाभ, घर-आङन, घाट बाट

साफ रखने की फल, ईहो सब तँ सिखबाक वस्तु थिकैक आ' से गाम पर कोदारि भँजने नहि हैतैक।

बचकानी—तखन एकर अर्थ भेल जे लिखि-पढ़ि कै घोड़ीक घास छिलैत जाथु।

नेनमणि—ई कतै लिखैत छैक जे लिखि-पढ़ि कै नोकरीए करी ?

बुद्धन—मुदा ई बूझल जे एतेक बात सिखबाक चाही से बड़ बेस मुदा ई टकुरी, ई चर्खा·····

नेनमणि—आहि, बुद्धन भाइ ! ई सब तँ गृहोद्योग थिकैक, सब केँ ने खेते पथार छैक आ' ने सब केँ नोकरी होइत छैक, तखन जौं आन लूरि सिखने रहत तँ भीख नहि माङै पड़तैक, अन्न बेत्रेक मरत नहि।

बुद्धन—एक दिश तँ सब जाति अपन लूरि बिसरि रहल अछि आ' दोसर दिश चललाह अछि लूरि सिखबै, से चलतइ ?

नेनमणि—से जा धरि परतंत्रताक गन्ध रहतैक ता धरि अवश्य किछु ई सब हेतैक। असल मे बुद्धन भाइ !

बचकानी—आ' कम असल मे·······?

नेनमणि—आ' दुरछी अहाँ तँ सब दिनक नकसुड़ारि छी। हँऽ, बुद्धन भाइ ! पहिने लिखलाहा-पढ़लाहा कँ कने जहाँ कोनो नोकरी भेटि गेलैक की गुमाने फाटै लगैत छल। बुझू नोकरी कोनो वरदान होइक।

मुदा ई परतंत्रताक प्रसाद छलैक। आब तँ लोक पढ़त जे कोना स्वावलंबी बनी, कोना सहयोगिताक भाव समाज मे भरी, कोना सेवा करबाक अभिलाषा लोक मे जगाबी, राष्ट्रक प्रति अनन्य प्रेम कोना उत्पन्न करी, ई सब ने थिकैक शिक्षाक उद्देश्य।

बचकानी—आ' बसात पीबि कै कोना जीबि सकैत छी।

नेनमणि—अहाँ सन अथाह कें बसातो पीबि कै जीबाक अधिकार कोनो स्वतंत्र देश मे नहि छैक। बुद्धन भाइ! युग बड़ तेजी सँ ससरि रहल छैक, आब बड़ तरक ब्रह्म बाबा कोशीक बाढ़ि कें नहि रोकि सकैत छथि, ताहि हेतु विज्ञानक शरण लेबै पड़त। अहाँ लोकनि पुरनका मनोवृत्ति कें छोड़ू, युग जे आगाँ बढ़ि रहल छैक ताहि मे सहयोग दिऔक।

बुद्धन—हौजी? बड़े छँटलह। बाज ऐलहुँ तोरा सङ्ग शास्त्रार्थ करबा सँ।

नेनमणि—बुद्धन भाइ! कनेक ध्यान दिऔक तँ हमरा गप्प पर, बड़का टा पाँतर मे पड़ल रही, संग मे हजार टाकाक नोट रहै, मुदा अन्न एको चुटकी नहि आ' पेट मे ज्वाला धधकैत रहै तँ अन्न चाही की नोट? नोट चटने ओ ज्वाला शान्त हैत?

बुद्धन—से कतहु होइक।

नेनमणि—तहिना मानसिक विकास कतबो भेल रहैक, बौद्धिक योग्यता मे सब सँ उँचका स्तर पर पहुँचल रहै मुदा शारीरिक ह्रास एतेक भेल रहैक जे घुसुकि नहि सकैत हो, बाजि नहि सकैत हो तँ ओ पण्डिताइ काज औतैक ?

बुद्धन—से तँ नहि औतैक।

नेनमणि—एकटा युग एहनो एलैक जे लोक केँ अपन काज अपना हाथेँ करबामे संकोच होइक।

बचकानी—एना ने कहू, जे जेहन अथबल से तेहन पैघ लोक।

नेनमणि—बहुतो पुरान विचारक लोक एखनो समाज मे छथि, जनिका नदी दिस सँ आबि कै लोटा मटिऐबा मे हीनताक बोध होइत छन्हि।

बचकानी—औ ! उपाय रहितन्हि तँ शौचो ने करितथि अपना हाथेँ। मुदा करताह की ?

नेनमणि—ई बड़ पैघ भ्रम लोकक छलैक जे शारीरिक श्रम कैनाइ उपहासक बात थीक। धन्य शारीरिक श्रम कैनिहार सब, जकरा प्रसादेँ बाबू भैया ढेकरैत रहैत छथि।

बचकानी—आ' हाकिम की हुकमान सब कुर्सी तोड़ैत छथि आ' बड़े कष्ट सँ रसगुल्ला केँ दुःख देल करैत छथिन्ह।

नेनमणि—आजुक युग लोक केँ मानसिक संग शारीरिक श्रम

करब सिखबैत छैक। तेँ हेतु नवीन-शिक्षा प्रणाली मे एहि सब बातक अँटाबेस भेलैक अछि। आब तँ ई बूझक चाही जे जेना हाथ कमाइत अछि, मुँह अन्न केँ चिबाबै मे खटैत अछि आ' बैसल बैसल पेट ओकरा पचबैत अछि तँ पेट नहि पैघ भेल, हाथो मुँहक सैह स्थान।

बचकानी---इह एहेन बुद्धि धिया पुता सभक होइक तखन तँ स्वर्गे भै जाय।

बुद्धन--हौ जी बाबू! जे नीक बुझि पड़ैत जाइ से करैत जाइ, हमरा सभ तँ पाकल आम भेलहुँ। दू-चारि दश वर्ष जीब की नहि। मुदा युग जे ने कराबै, जे ने देखाबै।

बचकानी---सुनल नहि अछि 'जीबी तँ की की ने देखी, 'युग चक्र' (C)नान दैत अछि'?

श्रमदान

स्थान – [ग्राम पथ, एक चमारक गर्दनि मे डिगडिगिया, एक व्यक्ति खद्धड़क पोशाक मे प्रवेश करैत :–]

ज्ञानधन—महात्माजीक तपस्या सँ हमरालोकनि केँ राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त भेल, मुदा आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करबाक हेतु आइ व्यक्ति मात्र केँ फाँड़ बान्है पड़त। ढोलिया सँ–बजा रे ! ढोल बजा।

(ढोलिया बजबैत अछि डिग् डिग्-डिग्)

ज्ञानधन—देशक एक एक गोटे सँ निवेदन अछि जे निर्माण कार्य मे तन मन धन सँ सहायता करू। श्रमदानक भूखलि भारत माता अहाँक आह्वान कै रहलि छथि।

(क्रमहिं लोक गोट पगरा एकट्ठा होमै लगैत अछि)

एकत्र भेल व्यक्ति मे सँ एक गोटे–

निरसन—ओ ज्ञानधन बाबू ! कथीक ढोलहो पिटबौने फिरैत छी ?

ज्ञानधन—देशक दरिद्रता केँ दूर करबाक हेतु सब गोटे फाँड़ बान्हू आ चलू कोशीक दूनू कछेड़ केँ तेना कै बान्ही जे बाढ़िक पानि सँ भसिआइ नहि।

एकत्र व्यक्ति मे सँ दोसर गोटे जे बेस नकिआइत छथि :–

जयराम—एना जँ कँछेँड़ केँ बन्हने बाँढ़ि बन्न होयऽ लाँगै तँ अनर्थे हैत। अहाँ लोँकनि जेना एँ कराँ खेँड़ि बुँझइँ जाँइ छिअइँ से कोँसी मैयाँक पँरताँप नहि बूँझल अँछि। तँरेँ तँरेँ खंधारि कँऽ घँर दुआँर सँब केँ चाँटि लेतीह खोँप सँहित कँवुतराँय नमः भँऽ जाँइ जैँब।

(ई सब ठाम नकिऐताह)

निरसन—मनुक्ख केँ एखन वड़ दिमागि भै गेल छैक जे हम सब जे चाहब से चट दै कै लेब मुदा एतबा ज्ञान नहि जे ओ बुढबा जे कैलाश पर बैसल अछि तकरो हाथ मे किछु छैक।

ज्ञानधन—अवश्य ओहि बूढ़ानाथ भोलेबाबाक हाथ मे सब किछु छैन्हि ओ जे चाहथि हेतैक सैह। आ एखन ई बुझबाक चाही जे ई बुद्धि जे हमरा लोकनि केँ फूरल अछि सेहो हुनके प्रेरणा सँ, हुनके कृपा सँ। हमरा लोकनि तँ आस्तिक छी, गाछ वृक्ष सँ लै माटि पाथर धरिक पूजा करैत छी। कोटि कोटि कंठ सँ कोशी मैयाक आगाँ मे ठाढ़ भै हुनकर प्रार्थना करबन्हि, अपन दुःख सुनैबन्हि तँ ओ अवश्य सुनतीह। विश्वास राखि कै यदि काज आरम्भ करी तँ सफलता ईश्वर अवश्य देताह।

जयराम—(नकिआइत, एना जौँ कोशी मैया सुनथि तँ जुलुम्मे

थीक, हुनका बुने अथलाह जहाँधरि हैत से मँऽ सकैत अछि, नीक करबा लेल ओ कतहु सूनथि, पानिक धार कतहु मनुक्खक दुक्ख सुनलकइ अछि ?

ज्ञानधन—की नास्तिक बनि कै रहू अथवा आस्तिक बनि कै। कहू की बनि कै रहब ?

जयराम—पहिने नास्तिक।

ज्ञानधन—तखन सुनू, नास्तिक ईश्वर पर विश्वास नहि राखि अपना शक्ति पर भरोस रखैत अछि। चारि कोटि बिहार निवासी यदि लागि जाइ तँ एक दिन मे कोशी बान्हि लेब।

जयराम—तखन हम आस्तिके रहब।

ज्ञानधन—वेस, तखन सुनू—महाकवि विद्यापति अन्तःकरण सँ गंगा माताक आह्वान कैलथिन्ह तँ गंगा माता अपना भक्तक आर्त्तवाणी सुनि आकुल भै गेलीह आ दौड़ल ऐलथिन्ह अपना भक्तक मनोरथ पूर्ण करबाक हेतु, तखन हमरा लोकनि एक स्वर सँ कोशी मैयाक प्रार्थना करबन्हि तँ ओ किऐक नहि सुनतीह ?

निरसन—औ ज्ञानधन बाबू! एकटा बात पहिने कहू जे बाढ़ि मे जे ओतेक पानि अबैत छैक तकरा अहाँ रखबैक कोना कै आ कतै कऽ ?

ज्ञानधन--सबटाक व्यवस्था हेतैक। चारू भाग नहरि बना

कै जेमहर पानिक काज पड़तैक तेमहर लै जेबैक। मुख्य केन्द्र पर बिजुलीक उत्पादन हेतैक घर घर मे लक्ष्मी खल खल हँसैत रुनझुन नचैत भेटतीह। साहस करू, फाँड़ बान्हू, उठू, कहू कोशी माताक जय हो।

(सब एक स्वर सँ कोशी माताक जय हो)

(पट परिवर्तित)

दोसर दृश्य

[स्वयं सेवकक दल कान्ह पर कोदारि काँख तर छिट्टा नेने गबैत प्रवेश करैत अछि]

भारत माता आकुल मन सँ मङइत छथि श्रमदान रे
फोलह आँखि, उठह तों आबहुँ कोटि कोटि सन्तान रे,
आइ मनुक्खक सोनित पीबक हेतु बहुत तैयार रे
आतुर आँखि तकइ अछि टकटक हमरे दिश संसार रे
मानव मे दानवता दमसै जकरा गर्व अपार रे
दलितक नाव पड़ल चक्कर मे आबि लगाबह पार रे
पहिने हृदयक साहस समटह पुनि सुमिरह भगवान रे
भारत माता आकुल मन सँ मङइत छथि श्रमदान रे
छी स्वतंत्र, नहि भै सकलहुँ अछि तदपि पूर्ण स्वाधीन रे,
दुख दारिद्र्य हटा नहि सकलहुँ, गौल न राग नवीन रे,
अपना पैरक आश एखन धरि कै न सकल जन दीन रे

हमरे बजबै पड़त ताहि पर जग मे शान्तिक वीन रे
संसारक उत्थान करक हित करह अपन निर्माण रे
फोलह आँखि, उठह तौँ आबहुँ कोटि मनुज सन्तान रे,
एक श्रमदानी—हम श्रमदानी अपना श्रम सँ करब जगक उद्धार
दोसर—श्रमक सिखा कै पाठ करब नित नव जीवन संचार।
तेसर—मनुज अपन थिक भाग्य बिधाता देखि लेत संसार।
चारिम—हम श्रमदानी अपना श्रम सँ बान्हब कोशी धार।
सब गोटे—भारत माता आकुल मन सँ मङइत छथि श्रमदान रे
फोलह आँखि उठह तौँ आबहुँ कोटि मनुज सन्तान रे (प्रस्थान)।

तेसर दृश्य

सुन्दर लाल—(प्रवेश कै) की ई छौंड़ा सब रड़ धुम्मस कैने फिरैत अछि? दम्म ने दुरुस्त खाली बात पकठोसल।

बबुजन—आहि रे वा! किछु काज मेहनति सँ होइत छैक तँ किछु फुककारो सँ, से ई इसकुलिया छौंड़ा सब काज करत से तँ भगवाने जनैत छथिन्ह तखन चल भाइ हूलेलेले।

सुन्दर लाल—सुनैत छिऐक जे सरकार दिश सँ इसकुलिया छौंड़ा सबकेँ किदन कहादनि सिखौल जाइत छैक। आब सरकार केँ जहाँ कतहु नहर छहर, बान्ह

धूर बनैबाक काज पड़तैक की सब छौंड़ा के जोति देल करतैक। कीदन एकर नाम धैने छैक ए० सी० सी०।

बबुजन — आब सीसी रहौ की बोतल, मुदा एकटा बात अवस्से जे इसकुलिए सब कें खूब हूथबरडा उठौने रहैत अछि। सब बड़े चुरकी पर सँ तेल चुअबैत रहैत छलाह अछि, एक मुट्ठी नार पोआर कोनो मालक सोझाँ मे कहैत छलिऐक देमै की छिलमिला उठैत छल आ आब तेहेन ने नम्भर केर लोभ मास्टर सब देने छैक जे सब नाङड़ि सुटकबैत सब काज करबा लेल वृत्त रहैत अछि।

सुन्दर लाल—जे सोचलक ई बात से बड़ बुधियार छल। देखहक आब पढ़ैत छैक बारहो बर्णक धिया पूता सब कें नोकरी भेटतैक नहि, तखन सब बेकार भेल गाम पर एहि खोन्ही सँ ओहि खोन्ही ढहनाइत फिरैत छल से तँ नहि ने हेतैक।

बबुजन— मुदा एकटा बात जे कोशी बन्हबाक काज एकरे सब सँ हेतैक ?

सुन्दर लाल—ई सब तँ एकटा लोक मे उत्साह अनबाक हेतु होइत छैक। असल मे एहि काजक हेतु देशक बड़का बड़का नेता सब जी जान लगौने छथि।

सुनहलक नहि जे राष्ट्रपति अपने ऐल छलथिन्ह कोशी बान्ह देखबाक लेल।

बबुजन— बहुत बाबू भैया कहैत छथिन्ह से सरकार एकटा टाटक ठाढ़ कैलक अछि। जतेक काज होइत छैक ताहि सँ बीस वड़ बेसी एकबार मे बढ़ा-चढ़ा कै लोक छापि दैत छैक।

सुन्दर लाल—आ' बहुत लोक कहैत छैक जे टुटपुजिया सब एहि बेर मे बड़का नेता बनै चाहैत अछि जाहि सँ अगिलाबेरक चुनाव मे कांग्रेस कें टिकट देबै पड़तैक।

बबुजन— ततबे नहि, बहुत गोटाक अनुमान छैन्हि जे एहि लाथें बहुत लोक अपन टेंट नीक जकाँ गरमा लेबा मे लागल अछि।

जयराम— (प्रवेश कै) (नकिआइत) से कोनो फूसि नहिं जे बुड़िबलेल छथि से माटि उघैत रहथु मुदा बुधिअरबा सब बगुली भरबे करत।

ज्ञान धम— (प्रवेश कै) एहि अवसर पर जे क्यौ अपन स्वार्थ सिद्ध करबाक पाछाँ लगताह तनिका इतिहास क्षमा नहि करतन्हि, इतिहासे नहि समाजो हुनका क्षमा करबालेल कथमपि तैआर नहि हैतन्हि।

जयराम— एहि तरहें संसार मे कतहु काज भेबो कैल छैक की एही ठाम सँ शुरू भेलैक अछि ?

ज्ञान धन— संसारक जे कोनो पराधीन देश स्वतन्त्रता प्राप्त कै अपना पैर पर आइ ठाढ़ भेल अछि ताहि सब देशक जनता मे एहिना उत्साहक लहरि उमड़ि ऐलैक अछि आ' आब सिंह जकाँ ओ गरजि रहल अछि। अपना देशक दुख दरिद्रता कें कालापानी पठाय व्यक्ति मात्र सुखी ओ प्रसन्न अछि।

जयराम— गप्पी सभक लेल तँ गप्पक खरिहान पसरले रहैत छैक, एखन नव योगी भेलाह अछि, कोना ने कांग्रेसक दोहाइ देबहक, मुदा हौ ज्ञान धन! कोनो देशक नाम लऽ सकैत छह?

ज्ञान धन—लगहिं मोछ परोसहिं दाढ़ी, एहि ठाम चीनक एक एक कण भूमि आइ लहलहा रहल छैक। एक-एक। जनता देशक निर्माणक हेतु अपन शरीर समर्पण कै चुकल छैक। ओहि ठाम पाखण्डीक निर्वाह कहाँ छैक?

जयराम—दूरक ढोल एहिना सोहौन लगैत छैक। सब लोक कहैत छैक जे चीन कम्युनिष्ट अछि।

ज्ञानधन—देशक निर्माण काज मे सोसलिस्ट आ कम्युनिष्टक भेदभाव रखने काज नहि चलत।

(नेपथ्य मे महात्मागान्धीजीक जय हो, राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसादक जय)

ज्ञानधन कृषक बोनिहारक मंडली अदम्य उत्साह सँ देशक निर्माण मे लागि गेल अछि। ओना तँ नेता सँ लै पंडित धरि शिक्षक सँ लै विद्यार्थी धरि समाजवादी सँ लै साम्यवादी धरि आब सन्नद्ध छथि, परन्तु सब सँ अधिक आवश्यकता अछि कृषके बोनिहार लोकनिक, जनिकर जीवन एहि कौशीक बाढ़ि सँ, संक्रामक रोग सँ जर्जर भै गेल छैन्हि। दोसर बात जीवन भरि बवुआनी कैनिहार कें ने एकर समुचित ज्ञान ने माटिक मर्म बुझबाक लूरि आ ने जी जान अरोपि काज करबाक क्षमता।

जयराम—एँ हो ज्ञानधन। समाजवादी लोकनि एहि मे भाग लैत छथि।

ज्ञानधन—जौं समाचार पत्रक दुनिआ सँ सरोकार रखैत हैब तँ प्रजा समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायणक वक्तव्य पढ़ने हैब।

जयराम—आ साम्यवादी लोकनि ?

ज्ञानधन—अखिल भारतीय साम्यवादी नेता श्री ए० के० गोपालन मुक्त कंठें अपना पार्टीक दिश सँ सहयोग देबाक वचन देलथिन्ह अछि।

सुन्दर लाल—औ जी ! असल मे यदि ई चाहैत छी जे सरकार हमरा सभक सहायता करै आ जतेक अभाव हमरा सभक साँझाँ मे मुँह बौने ठाढ़ अछि तकर पूर्ति हो तँ ई परम आवश्यक थीक जे सब गोटे जी जान सँ सरकारक सहायता मे लागि जाइ।

ज्ञानधन—एहि सँ तँ ने हम कांग्रेसक उपकार करैत छिऐक

ने कोनो दोसर पाटीक, ने कोनो नेताक उपकार करैत छिऐन्हि ने कोनो नेता हैबाक कामना रखनिहारक। एकर प्रत्यच्छ फल त हमरे अहाँ के भेटत।

जयराम—आ जौँ नहि सुतरलैक तखन ?

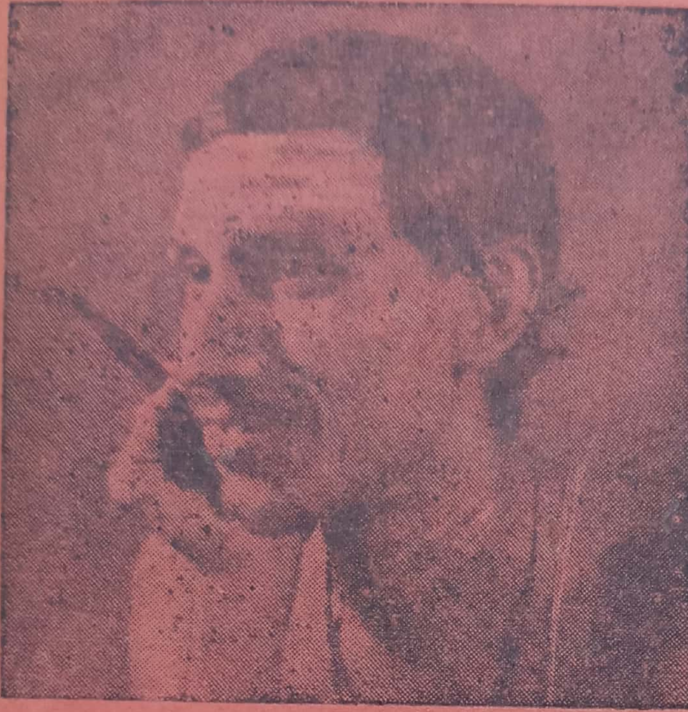
ज्ञानधन—एना जौँ आशंका करै लागी तँ अन्न नहि खाइ कारण जे जौँ पेट मे जा कै ओ नहि पचल ?

सुन्दर लाल—चलह आइ सौँ से गौआँ मिलि कै निश्चय करी आ बाले बच्चेँ एक बेरि देशक निर्माण, अपना भाग्यक निर्माण, अपना सन्तानक भविष्य निर्माण मे लागि जाइ (बाजू कोशी माताक जय हो) सब स्वर मे स्वर मिलबैत अछि।

ऊठि जो, तकैत छे कथीक बाट आब तोँ
आबि गेल छे स्वतंत्रताक घाट आब तोँ
फूक शंख, जागि गेल आइ सुप्त देश ई
भै सशंक, भागि गेल आइ गुप्त क्लेश ई
हो सचेत, फाँड़ बान्ह, काज छउ विशेष ई
दूर भै सकै स्वदेश केर दीन वेश ई
श्रम करैत काज केर क्रम बना विराट तो
ऊठि जो, तकैत छे कथीक आब बाट तोँ
क्रान्ति हो कि शान्ति आइ कोन कोन व्याप्त हो
बन्धु - भाव - बद्धलोक, दुष्टता समाप्त हो
ताहि वस्तु केर वृद्धि हो कि जे कमाप्त हो
व्यक्ति मात्र केँ स्वतंत्रताक स्वाद प्राप्त हो
त्याग मोह तोड़ निन्न, छोड़ आब खाट तोँ
आबि गेल छेँ स्वतंत्रताक आब घाट तोँ।

(समाप्त)

परिचय—



गंडकी-कौशिक ओ कमला-वाग्वतीक जल सँ सिक्त मिथिलाक अन्नपूर्णा केँ पूजित बनैबाक हेतु जतबे आवश्यकता वैज्ञानिक उपादानक अछि, ततबे विद्यापति-गोविन्द दास ओ चन्दा झा हर्षनाथक कृति सँ सरस मिथिलाक भाषा-साहित्य केँ लोकप्रिय बनैवाक हेतु नवयुगक उपयुक्त रचनाक। एहि मर्म केँ हृदयङ्गम करैत अपन साधना सँ मातृभाषाक वैभव-वृद्धि मे जे साधक लोकनि प्रवृत्त छथि ताहि मे 'अमर'जी विशेष उल्लेखनीय थिकाह।

कौलिकतँ ई वैयाकरण, वृत्तिएँ शिक्षक, रुचिएँ कवि एवं साधने पत्रकार ओ परिमार्जित शैलीक लेखक—अमरजीक परिचय एक वाक्य मे यैह देल जा सकैछ। यद्यपि हिनक कृतिक प्रसिद्धि सभा-समितिक मञ्च सँ पुरस्कृत होइत रहल अछि, किन्तु एकान्त साधना पृष्ठ हिनक लेखनी थीक।

प्रा० पं० श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'

चन्द्रधारी मिथिला कालेज

दरभंगा